श्रीकृष्ण परमात्मने नमः

महामति श्री प्राणनाथ और परवर्ती प्रणामी संत-साहित्य

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम संस्करण
बुधजी के शाके 327
वि.सं. 2063
ईसवी सन् 2006
1000 प्रतियां

महामति श्री प्राणनाथ और परवर्ती संत एवं साहित्य

(परवर्ती प्रणामी संतों एवं साहित्य का परिचय)

प्रकाशक :

महामति प्राणनाथ साहित्य प्रकाशन समिति
(श्री कृष्ण परनामी मंदिर, राजापार्क, आदर्शनगर, जयपुर)

प्राप्ति स्थान :

श्रीकृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर,
सैयदवाड़ा, वरियावही बाजार,
सूरत–395 003

श्री कृष्ण परनामी मंदिर,
राजापार्क, आदर्शनगर,
जयपुर–302 004

अनन्त श्री प्राणनाथ जी मंदिर,
धाम मोहल्ला,
पन्ना (म.प्र.) – 488 001

न्यौछावर – रुपये 8.00

मुद्रक :
पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

* महामति प्राणनाथ - एक संक्षिप्त परिचय 01
* परवर्ती संत एवं उनका साहित्य 02
  1. स्वामी लालदास 02
  2. स्वामी मुकुन्ददास 04
  3. महाराजा छत्रसाल 11
  4. हिरदे साह 12
  5. स्वामी बृज भूषण 14
  6. भट्टाचार्य 16
  7. पंचम सिंह 17
  8. कवि मुरलीधर 18
  9. कवि बक्शी हंसराज 18
  10. मुकुन्द स्वामी 19
  11. मुकुन्द स्वामी की उलटबासियां 20
  12. संत गोपालदास 21
  13. जीवन मस्तान 22
  14. कवि मोहन दास 22
  15. कवि चेतनदास 23
  16. कवि कृष्णदास 24
  17. स्वामी सदानन्द 25
* निजानन्द सम्प्रदाय 26

Scanned with OKEN Scanner

12. सन्त गोपालदास

इनके भजनों का संग्रह 'श्री निजानन्द भजनमाला' में मिलता है। इन्होंने इन भजनों में यत्र-तत्र गुरु की प्रशंसा, सद्गुरु की पहचान एवं प्रेमलक्षणा भक्ति का महत्त्व बताया है। ब्रह्म के वियोग में आत्मा की व्याकुलता दर्शायी है। विरह की पीड़ा की अभिव्यक्ति में आध्यात्मिक तत्वों का समावेश है। श्रीकृष्ण को अक्षरातीत परब्रह्म के रूप में पूजा गया है। नख-शिख सौन्दर्य का वर्णन भी किया गया है। कुछ पदों में प्रणामी धर्म दर्शन का विवेचन भी किया गया है। इन पदों में ब्रह्म को जानने की जिज्ञासा एवं उस जिज्ञासा का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि हम सन्त गोपालदास की वाणी की नहीं बल्कि स्वयं महामति श्री प्राणनाथ जी की ही वाणी की चर्चा कर रहे हैं। जिन तथ्यों पर महामति श्री प्राणनाथ ने पहले ही विस्तृत चर्चा की है, उन्हीं तथ्यों पर सन्त गोपालदास की लेखनी भी नि:शुंक चली है।

सन्त गोपालदास लिखते हैं :-

ले पिया शब्द रूपे धरूं सुरति, प्रेम परतीत बढ़ाए।
प्रेम सखि गवनी अपने गृह, भई दुलहिन पिया पाये।।

श्री निजानन्द भजनमाला-सन्त गोपालदास

महामति श्री प्राणनाथ (इन्द्रावती) ने अपने स्वामी (प्रियतम) से बिछुड़ने पर पश्चाताप किया है :-

जनम अंध जो हम हते, सो तुम देखीते किए।
पीठ पकड़ी हम ना सके, सो फेर कर पकर लिए।
पेहेले तो हम न पेहेचाने, सो सालत हैं मन।
चरचा कर कर समझाए, कहे बिध बिध के वचन।। (प्रकाश हि. 10/3, 5)

सन्त गोपालदास के शब्दों में उपरोक्त स्थिति की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार हुई है :-

Scanned with OKEN Scanner

कहा करूँ कासों कहूं। न जागा कित जाऊँ।।
दिल की दरद का सों कही। यह बिध भयो मोर हाल।।
जो चाहो सोई करो। मैं हों सरन तुमार।।
जै नचाओ नाचो तस। तुमही बनायो भवजाल।।
मेहरबान दाता तुम। जीवन के जीवन मोर।।
'प्रेमसखि' बूड़त है। खैंचो अपनी ओर।। (श्री निजानन्द भजनमाला)

13. जीवन मस्तान

इनकी वाणियों का नाम 'पंचक प्रकाश' है। किंवदंती के अनुसार आपको महामति श्री प्राणनाथ ने दर्शन देकर पन्नाधाम बुलाया तथा अपने धाम धनी श्री प्राणनाथ जी तथा उनके परना धाम पर सवा लाख पंचके (चौपाई) लिखी थी। इनके पंचकों में श्रीकृष्ण लीला, देशकाल स्थिति का वर्णन, धाम वर्णन, महामति श्री प्राणनाथ जी की स्तुति आदि है। महामति श्री प्राणनाथ जी की तरह जीवन मस्तान ने भी श्री कृष्ण जन्म और लीला का वर्णन किया है:–

जीवन मस्ताने नंद महर घर, बाजत आज बधाई है।
पार ब्रह्म पूरन पुरुषोत्तम, प्रगटे कुंवर कन्हाई है।।
कंस काल नंद अवतारे, वेद निशान धुराई है।
भादों रैनि अष्टमी तिथि को, वार बुध बलदाई है।। (श्री निजानंद भजनमाला)

14. कवि मोहनदास

ये चेतनदास के शिष्य थे। इन्होंने कृष्ण मुरलीवादन पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किए हैं :–

एक दिन बंसी बजायो सांवलिया। ब्रजबाला को मोह लिया।।
मोहे सुर नर ऋषि मुनि ज्ञानी। ध्यानी को ध्यान छोड़ाय दिया।।
जागी जोग से जाग चिहुंक उठे। शब्द सकल उर बोध लिया।।
मोहे लोक चतुर्दश तीनों। शेष महेश, गणेश हिया।।

Scanned with OKEN Scanner

महामति श्री प्राणनाथ जी

महामति प्राणनाथ साहित्य प्रकाशन समिति, जयपुर

(श्री 5 पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना: श्री 5 महामंगलपुरी धाम, सूरत
एवं श्री परनामी पंचायत, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में)

श्रीकृष्ण परनामी मंदिर, राजापार्क, आदर्श नगर,
जयपुर–302 004 • फोन : 2624542

Scanned with OKEN Scanner